हिन्दी में व्यंजनों की संख्या 33 है। —

क	ख	ग	घ	ङ	कवर्ग	स्पर्श
च	छ	ज	झ	ञ	चवर्ग	
ट	ठ	ड	ढ	ण	टवर्ग	
त	थ	द	ध	न	तवर्ग	
प	फ	ब	भ	म	पवर्ग	
य	र	ल	व		वर्गहीन अन्तस्थ	
श	ष	स	ह		वर्गहीन ऊष्म	

- अनुनासिक व्यंजन :- जिन व्यंजनों के उच्चारण में ध्वनि नाक से निकलती है उन्हें अनुनासिक व्यंजन कहते हैं।
- अन्य व्यंजन ध्वनियाँ - हिन्दी में तीन व्यंजन ध्वनियाँ - ड़ ढ़ तथा व और विकसित हुई हैं। इनके अतिरिक्त पाँच व्यंजन ध्वनियाँ - क, ख, ग, ज तथा फ हिन्दी में फारसी तथा अरबी से आयी हैं।
- संयुक्ताक्षर :- हिन्दी में तीन संयुक्ताक्षर - क्ष (क + ष), त्र (त् + र) तथा ज्ञ (ज् + ञ) का भी प्रयोग किया जाता है।

इस प्रकार आज हिन्दी में (11 + 2) 12 स्वर तथा (33 + 2 + 1 + 3 + 5 + 3) = 47 व्यंजन ध्वनियाँ प्रचलित हैं और स्वर तथा व्यंजनों की कुल संख्या 59 है।

आभ्यांतर प्रयत्न के अनुसार व्यंजन ध्वनियों के निम्नलिखित आठ भेद होते हैं :-

(1) स्पर्श व्यंजन :- वे व्यंजन जिनके उच्चारण में मुख द्वार को बन्द करके खोलते हैं जिससे हवा उच्चारण स्थानों को केवल स्पर्श करती है, स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं ये व्यंजन हैं - क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प, फ, ब तथा भ।

(2) स्पर्श संघर्षी :- जिन व्यंजनों का उच्चारण करने में मुख-द्वार को बन्द करके, इस प्रकार बोलते हैं कि हवा उच्चारण स्थानों को रगड़ती चलती है, स्पर्श संघर्षी व्यंजन कहलाते हैं। जैसे - च, छ, ज, झ इस वर्ग में आते हैं।

(3) संघर्षी - जब मुख द्वार इतना सकरा हो जाता है कि हवा बहुत रगड़ खाती है और शीत्कार की ध्वनि निकलती है तो ऐसे व्यंजन को संघर्षी व्यंजन कहते हैं। जैसे - फ, ब, स, ज, श, ख, ग तथा ट।

(4) अनुनासिक :- जिन व्यंजनों का उच्चारण करने में मुख द्वार को बन्द करके खोला जाता है और नासिक विवर

खुला रहता है उन्हें अनुनासिक व्यंजन कहते हैं। ङ, ञ, ण, न तथा म इस वर्ग में आते हैं।

(5) पार्श्विक :- जिन व्यंजनों का उच्चारण करने में मुख द्वार बीच में बन्द होता है और हवा दोनों ओर से निकल जाती है उन्हें पार्श्विक व्यंजन कहते हैं। जैसे इस वर्ग में सिर्फ ल अक्षर आता है।

(6) कुंठित :- जिन व्यंजनों का उच्चारण करने में मुख द्वार जीभ की नोक से बहुत जल्द-जल्द बन्द होता है और दो-तीन बार मुख खुलता है, वे कुंठित व्यंजन कहे जाते हैं। इस वर्ग में 'र' अक्षर आते हैं।

(7) उत्क्षिप्त — जिन व्यंजनों के उच्चारण में जीभ की नोक उलटकर तालु को कुछ इस तरह छूकर मुख-द्वार से झटके से खोलती है, वे उत्क्षिप्त व्यंजन कहलाते हैं इसमें ड़ तथा ढ़ इसी वर्ग में आते हैं।

(8) अर्द्ध स्वर → जिन व्यंजनों के उच्चारण में मुख-द्वार संकरा तो जाता है

Date ______
Page ______

और हवा स्वरों के उच्चारण की भाँति बीच से निकल जाती है, परंतु उसका प्रभाव उच्चारण स्थानों पर पड़ता है, अर्द्ध - स्वर व्यंजन कहलाते हैं। य तथा व व्यंजन इस वर्ग में आते हैं।

इस प्रकार से देखा जाता है कि स्वरों का उच्चारण स्वर के रूप में होता है। व्यंजनों का उच्चारण स्पष्ट ध्वनि के रूप में होता है। प्रत्येक उच्चारण - स्वर और ध्वनि के रूप में अथवा स्वर और व्यंजन के रंग में रंगा होता है, इसलिए अक्षरों को वर्णभी कहते हैं।

स्वर स्वतंत्र अथवा स्वयं ध्वनित होते हैं लेकिन कोई भी व्यंजन किसी एक स्वर की सहायता के बिना व्यक्त नहीं होता। व्यंजन के स्पष्ट उच्चारण के लिए व्यंजन के पहले या पीछे किसी एक स्वर की अपेक्षा होती है। मुखाकाश में वायु के संचरण मात्र से स्वरों का ध्वरण होता है। व्यंजनों के उच्चारण के लिए मुखाकाश में वायु और जिह्वा को परस्पर विविधतया घात, अघात, प्रत्याघात, व्याघात करना पड़ता है।

—— x —— x ——